मित्र–सम्बंधियों को भी अपना अनुभव सुनाना है कैसे हम परमपिता परमात्मा को याद करते हैं ;क्योंकि बिगर पहचान ईश्वर को याद करना कोई काम का नहीं। बाप ने समझाया है आधा कल्प शिवबाबा की पूजा करते आये होंगे। जिन्हों के ऐसे संस्कार होंगे वह दूसरे जन्म भी शिव की पूजा करते आते हैं ;परंतु यथार्थ उनको कोई नहीं जानते। कितना लम्बा है। कितना चौड़ा है। जैसे लौकिक बाप की याद आने से याद आता है। कितना बड़ा है वा छोटा है। कोई ....भी होते हैं। अब शिवबाबा लिए भी पूछना चाहिए कितना बड़ा है। वह किसको पता नहीं है सिवा तेरे। तुम ब्राह्मण बिंदी कहते हो तो हंसी करते हैं। बस, बाप बिंदी है। अजब खाते हैं। यह कैसे हो सकता है। कभी नहीं मानेंगे और खुद मनुष्य बोलते हैं आत्मा स्टार मिसल है। वह भी परम आत्मा है तो आत्मा इतनी ही होगी ना। अगर बड़ी हो तो जब इस तन में बैठते हैं तो यहां गोरा निकल आवे। तो यह तुम बच्चे समझते हैं ;क्योंकि बाप बच्चों को ही आकर रचता और रचना की आदि मध्य अंत का ज्ञान बताते हैं। कहते हैं मैं जो हूं, जैसा हूं कोई नहीं जानते हैं। आत्मा लिए भी समझाते हैं। मनुष्य रोज कहते हैं पतित आत्मा, पावन आत्मा। तो आत्मा लिए ही कहते हैं ना। कहते भी हैं छोटी स्टार मिसल है ;परंतु यह खयाल ....है इतनी छोटी आत्मा 84जन्म कैसे लेती है। कैसे रिपीट करती है। यह खयाल कभी नहीं आवेगा। सिर्फ कहने लिए कहते स्टार मिसल है। यह नहीं समझते कितना छोटा सितारा 84लाख योनियां जनावर आदि कैसे बनते। बाप आकर सभी बातें अच्छी रीत समझाते हैं। बेहद का बाप समझाते हैं यह तो कल की बात है। तुम अब तक मेरी जयंती भी मनाते आते हो। वर्ष 21 अब तो नहीं आता हूं। एक ही बार आता हूं। इसका यादगार भक्तिमार्ग में मनाते आते हैं। सतयुग में तो नहीं मनाते हैं। वहां शिव की पूजा तो कोई करते नहीं। कोई याद करते हैं। बाप समझाते हैं यह सब भक्तिमार्ग द्वापर से शुरू होता है ;परंतु जानते किसको भी नहीं। लक्ष्मी–नारायण की पूजा करते हैं। दोनों को चार2 भुजायें दे दी हैं। अब दोनों तो चतुर्भुज नहीं हैं। दो लक्ष्मी दो नारायण की हैं। शंख,चक्र भी उनको नहीं है। यह तो ब्राह्मणों के अलंकार हैं। शंख ज्ञान का तेरे मुख से बजता है। जैसे कृष्ण को मुरली देते हैं ;लेकिन ज्ञान की मुरली तो तुम बजाते हो। इस मुरली वा शंख की बात नहीं। सबका अर्थ है। गदा की भी दरकार नहीं। वह तो हिंसा की चीज है। तेरे हाथ में ज्ञान की गदा है। यह सब बातें बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। बाकी तो सब पूजा करते रहते। शास्त्र सुनाते रहते। अर्थ कुछ नहीं। वह सब हैं भक्तिमार्ग। अब तो तुम बहुत थोड़े हो। धीरे2 वृद्धि होगी। 108 की विजयमाला बनती है तो उनकी प्रजा कितनी होगी। राजायें थोड़े होते हैं। प्रजा तो ढेर होते हैं। इसलिए बाप कहते हैं बड़े शहरों में जहां ढेर मनुष्य हैं वहां म्युजियम बनाओ तो बहुत आयेंगे। उनको समझाओ। 7दिन न दे सको तो 5दिया, 4दियो। पहले से सात रोज सुन डर जाते हैं। सिधत नहीं करनी चाहिए कि सात रोज देना ही पड़ेगां पहले पूछना चाहिए कितने दिन रहेंगे। 4दिन रहेंगे ,अच्छा, 1घंटा रोज दे सकते हो?नब्ज देखनी चाहिए। कहे मुश्किल है तो समझो इसमें दम नहीं है। कहे कोशिश कर आयेंगे तो समझो कुछ प्रजा में आने वाला है। कहे जरूर आउंगा तो समझो तीव्र पुरुषार्थी है। ब्राह्मण बन सकता है। तो नब्ज देखनी चाहिए। 7रोज है ठीक। .. ..टाइम में भी 7रोज रखते हैं। जो तीव्र पुरुषार्थी होंगे वह 7रोज देंगे। इनको पहले टेमटेशन दियो आओ तो समझावें बेहद के बाप से कैसे बेहद का वर्सा ले सकते हो। भारत को बेहद का राज्य भी था। हद का राज्य भी था। अब तो पंचायती राज्य है। तो बच्चों को सारा 84का चक्र समझाया गया है। यह कोई स्वदर्शन चक्र तो नहीं है, जो हाथ में फिराते हो। यह तो अंदर में बुद्धि में है। अब वापस घर जावेंगे। फिर यहां आकर 84जन्म लेंगे। इतना भी सुबह को ....याद करो। अब वापस जाना है। तो भी बहुत कमाई है। कोई आसुरी धंधा न करना है। कोई तो धंधे–धोरी में इतना बिजी रहते हैं जो 15मिनट भी याद नहीं कर सकते। कहते धंधे से थक कर सो जाता

हूं। सुबह को उठ धंधे पर चला जाता हूं। याद नहीं कर सकता। अब याद न करेंगे तो विकर्म विनाश न होंगे। पद भ्रष्ट हो प्रजा में आ जावेंगे ना। पुरुषार्थ तो करना है ऐसे मोस्ट बिलवेड बाप से बेहद स्वर्ग की बादशाही लेने का। 24घंटे तो कोई काम नहीं करता। किस भी हालत में याद जरूर करना है। जो पावन बन पावन दुनियां में जाय सकें। गरीब तो बहुत साहुकार बनने हैं। न साहुकार पुरुष आते हैं, न साहुकार स्त्रियां आती हैं। स्त्रियां भी गरीब ही उठाती हैं। माताओं पास कुछ न है तो और कमाई जास्ती कर सकते हैं। जिन पास पैसा है वह कम कमाई कर सकते हैं। बाबा को आठ आने, रुपये का भी मनिऑर्डर भेज देते हैं। हमारी तो एक ईंट लगाय दिया। मैं लिखता हूं यह तो तेरे सोने की ईंअ लग गई। चांदी की भी नहीं। अगर इतना याद करते हैं ,प्यार है सोने के महल बन सकते हैं। इसलिए गरीब निवाज नाम पड़ा है। गरीबों का बहुत उंच पद बनता है और है बहुत सहज। पाई–पैसे का ....है। बच्चे तो बाबा को तेरे से बहुत है। कितने ढेर ब्रह्माकुमारी बनते हैं। सूर्यवंशी–चंद्रवंशी घराना बनना तो जरूर है। भावी टले न टले। तेरे लिए तो वंडर है। वह तो मेले पर मैले होने जाते हैं। यहां तो आकर गुल2 बनते हैं। वह तो रोज मंदिर में धक्के खाते हैं। तुम तो 6महीने 12 महीने यहां आते हो। अच्छे2 बच्चों को तो बहुत कशिश होनी चाहिए। वह तो महीने2 जरूर चक्र लगायेंगे जिनको कशिश होगी। वह भी थोड़ा समय मिलन का है। ऐसी कैलमिटीज आवेंगी जो सभी खलास हो जायेगी। तुम आवाज सुनते रहेंगे। वह तो कहते स्टार गिरेगा ;लेकिन स्टार गिरने से प्रलय नहीं होगी। प्रलय तो इन बाम्ब्स से होगी। जो आते हैं ट्रेन में तो मिडिल्स लगी होनी चाहिए। जहां भी जाओ इस मेडिल्स (से) बहुत सर्विस कर सकते हो ;परंतु बच्चों याद की कशिश नहीं है। इसलिए देहअभिमान आ जाता है। बैज लगाने लज्जा आती है। मिलेट्री को तो सदैव बैज लगा रहता है। तुम भी रुहानी मिलेट्री हो ना। एक तरफ त्रिमूर्ति बाप ,दूसरे तरफ वर्सा। बहुत समझाने में सहज है। तुम भारतवासी देवी–देवता थे। स्वर्गवासी थे। अब चक्र लगाय नर्कवासी बने हो। अब बाप को याद करो तो पाप कट जावेंगे। फिर स्वर्ग का वर्सा मिल जायेंगे। यह बताने में मेहनत है क्या?अच्छा,मीठे2 रुहानी बच्चों ,यह अक्षर भी बाप ही कह सकते हैं। यह अक्षर कोई मनुष्य तो कह न सकते। रुहानी बाप जिस्मानी दादा द्वारा बच्चों को यादप्यार देते हैं। अर्थ सहित समझाते हैं। तुम सृष्टि और ब्रह्मांड दोनों के मालिक बनते हो। मैं नहीं बनता हूं। ऐसे मालिक बनने वाले को गुडनाइट और नमस्ते।

यहां तुम बैठते हो तो अंदर में बहुत खुशी होनी चाहिए। अथाह सुख मिल रहा है। बाबा हमारे सन्मुख बैठे हैं। भोजन खाते हैं। शरीर में बैठ देखते हो। बाबा हमको पढ़ाते हैं। यह भी तुम जानते हो। मनमनाभव अक्षर अभी ही सुनते हो। फिर कब नहीं सुनते। जितना साफ होंगे उतनी ही चकमक तरफ खेंचेंगे। आत्माएं चकमक पिछाड़ी भागती हैं। बाकी शरीर तो खतम हो जावेंगे। बच्चे जानते हैं आत्माओं का लिमिटेड नम्बर है। 500करोड़ से कम वा जास्ती नहीं हो सकते हैं। लड़ाई में करोड़ों मरते हैं फिर जाकर जन्म लेते हैं। मनुष्य ही बनते हैं। यह सब राज तुम बच्चे ही समझते हो। गीता का भगवान कृष्ण नहीं है। यह भी बाप आय समझाते हैं। तब तुम समझते हो। तुम्हारी विजय इस एक बात में होनी है। गीता में भगवान का नाम डालने से ही इतना नाम देते हैं। कृष्ण की याद आवेगी तो यहां शिव को याद कर न सके। याद परमधाम में आयेगी। कृष्ण को उपर नहीं समझेंगे। उपर में है शिवबाबा। कहते हैं मैं भी तुम आत्माओं साथ परमधाम में रहता हूं। अच्छा, बाबा ने समझाया है इन बैजेज पर तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। दस को फ्री देंगे एक ऐसा निकलेगा जो तुम्हारा दस का दाम निकल आवेगा। बैज से तुम कोई को स्वर्ग का महाराजा बनाय सकते हो। इसमें पूरी नालेज है ;परंतु ऐसा कोई बच्चा दिल पर चढ़ा हुआ नहीं है , जो ऐसा काम करके दिखावे। फिर कह देता हूं ड्रामा की भावी। अच्छाजी, अब विदाई।

'मन्मनाभव और मद्याजी भव' ओमशांति ।